हिन्दुस्तान एण्टीबायोटिक्स प्राइवेट लिमिटेड

+

*२८० { श्री आसर :
श्री खुशवक्त राय :

क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने १९५४ में हिन्दुस्तान एण्टीबायोटिक्स (प्राइवेट) लिमिटेड की पैनिसिलिन परियोजना के टेक्निकल पहलुओं की उत्पादन और गवेषणा की दृष्टि से परीक्षा करने के लिये वैज्ञानिकों की एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की थी ;

(ख) यदि हां, तो उस समिति ने कोई सिफारिशें की हैं ;

(ग) इस बीच किन सिफारिशों को कार्यान्वित किया जा चुका है ; और

(घ) क्या इसकी रिपोर्ट की एक प्रति, जिसमें सिफारिशें दी हुई हों, सभा-पटल पर रखी जायेगी ?

वाणिज्य तथा उद्योग उपमंत्री (श्री सतीश चन्द्र) : (क) जी हां ।

(ख) इस समिति ने तीन रिपोर्टें पेश की हैं ।

(ग) पहली दो रिपोर्टों में दी गयी अधिकांश सिफारिशों पर अमल किया जा चुका है । तीसरी रिपोर्ट में की गयी सिफारिशों की जाच पड़ताल की जा चुकी है और जहां जरूरी समझा गया है, कार्रवाई शुरू कर दी गयी है ।

(घ) इन रिपोर्टों की प्रतियां सभा की मेज पर रखने से कोई उपयोगी उद्देश्य पूरा होने की सम्भावना नहीं है ।

श्री आसार : क्या यह सच है कि समिति को इस सिफारिश के बावजूद कि सुपरिन-टेंडिंग इंजीनियर का पद समाप्त किया जाय, न केवल ऐसा नहीं किया गया है परन्तु उसके नीचे नये इंजीनियरों की नियुक्ति की गई है ?

श्री सतीश चन्द्र : पूरा समझ में नहीं आया ।

डा० राम सुभग सिंह : उन्होंने पूछा है कि क्या यह सच है कि सुपरिनटेंडिंग इंजीनियर का पद समाप्त किया जाय जिसकी कि सिफ़ारिश कमेटी ने की थी उसको न करके और नीचे के अफ़सरों को बहाल कर दिया गया है ?

श्री सतीश चन्द्र : इस तरह की कुछ सिफारिशें कमेटी ने की थी । लेकिन मैं अर्ज करना चाहता हूं कि कमेटी का काम सिर्फ़ यह था कि प्रोडेक्शन और रिसर्च के बारे में अपनी सिफारिशें दें । उसकी ऐडमिनिस्ट्रेशन के बारे में कोई राय नहीं मांगी गई थी । इस वक्त फैक्टरी बढ़ रही है, साठ परसेंट एक्सपेंशन करने का काम चल रहा है और इस प्रकार की सिफारिशों को नई रोशनी में देखना होगा कि क्या हो सकता है ।

Shri Khadilkar: May I know whether the recommendations of the Committee, whatever they were, were nullified by the man in charge, Shri Dogra, about whose conduct there was a recent enquiry?

Shri Satish Chandra: No recommendation of the Committee was nullified by any individual The Managing Director in fact placed these reports before the Board of Directors. They have been thoroughly considered. Many of the recommendations have accepted and implemented, but there are certain practical difficulties in regard to some of the recommendations which could not be implemented.

Shri V. P. Nayar: The hon. Deputy Minister said that there is no useful purpose in laying the copy of the recommendations on the Table of the

House. May I know whether the reports will be made available to those Members who feel that there may be some use to themselves in reading them, and may I further know whether the recommendations include any specific recommendations for the manufacture of anti-biotics such as Aureomycin and Tetracyclin which are not being produced there now?

Shri Satish Chandra: I may clarify one point here two reports of this Committee related to a period when the factory was under construction The third report relates to many matters of details such as the organisation, production and, the research activities in the factory, their proper co-ordination and the lines along which the factory can be further developed All these are very technical matters They also relate to cost accounting and other things, and in the case of a commercial concern, it is not proper to publicize these matters

Shri V P Nayar: I only wanted to know

Mr Speaker. All hon Members may put their questions clearly and elicit an answer

Shri V P Nayar. I just wanted to know whether some of us who want to study this can get a copy, however technical it may be We will make an effort to understand it.

Mr Speaker: Two or three questions were strung together I was not myself able to make out what he wanted Therefore, hon Members will put a simple question

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): As far as the technical aspects are concerned, if any hon. Member wants to peruse them, we shall certainly make those recommendations available to the Members.

चाय का निर्यात

\+

*२८१ { डा० राम सुभग सिंह :
श्री रघुनाथ सिंह :
श्री भि० कु० चौधरी :
श्री ल्वनेकर :
श्री अर्जुन सिंह भदौरिया :
श्रीमती इला पालचौधरी :

क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि जनवरी-सितम्बर, १९५७ में भारत से चाय के निर्यात में कमी हुई;

(ख) यदि हां, तो कितनी और उसके क्या कारण हैं,

(ग) १९५५ और १९५६ में उसी अवधी में कितनी चाय का निर्यात किया गया, और

(घ) चाय के निर्यात में और कमी को रोकने के लिये क्या उपाय किये जा रहे हैं ?

वाणिज्य मंत्री (श्री कानूनगो) (क) से (ग) १९५३, १९५४, १९५५, १९५६ और १९५७ के पहले नौ महीनों में चाय का निर्यात क्रमशः ३१ ५५ २७ ३१, २५ ६५, ३५ २ और ३० ७ करोड पौंड हुआ । १९५६ में खतम होने वाले चार वर्षों की जनवरी से सितम्बर तक की अवधि में हुए निर्यात के औसत से तुलना करें तो १९५७ की इसी अवधि में हुए निर्यात में कोई कमी दिखाई नहीं देती ।

(घ) सरकार के विचार में यह स्थिति ऐसी चिन्ताजनक नहीं है कि फौरन ही कोई खास कार्रवाई करने की जरूरत हो, फिर भी निर्यात बढ़ाने के लिये साधारण तौर पर बराबर कोशिश की जा रही है ।

Shri R Ramanathan Chettiar: What is the total quantity of tea exported to dollar areas during this period and has there been any fall in 1957?